हिंदी लेखिकाओं की कहानी में स्त्री संवेदना

सुरेखा अशोक बेलगली

सहायक प्रोफेसर, बी. शंकरानंद कला वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय, कुडची।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17264067

ABSTRACT:

मैत्रेयी पुष्पा जी की कहानी "फैसला," कृष्णा सोबती जी की "सिक्का बदल गया," सुधा अरोड़ा जी की "रहोगी तुम वही," मालती जोशी जी की "बहुरि अकेला," मृदुला गर्ग जी की "हरी बिंदी" तथा "मीरा नाची" कहानियों में नारी संवेदनाओं का उल्लेख किस प्रकार से किया गया है। उनमें स्त्री की भावनाओं का बहुत ही सूक्ष्म तथा रोचकता से भरी हुई कहानी हमारे सामने उपलब्ध होती है। "फैसला" कहानी में बासुमति का पात्र चित्रण सजीव हो उठा है। बदलते समाज में स्त्री का स्थान मान बदलते दिखाई देता है, पर है नहीं। पढ़ी-लिखी महिला की सोच भले ही शुरू में हार हो, लेकिन समय के साथ सही फैसला लेती है। पुरुष कितना भी कोशिश करे, सत्य के सामने हार मानने के सिवा कुछ नहीं कर सकता। कई सालों से अपना दबदबा बनाए रखा था। समाज उसका बाल भी बांका नहीं कर सका था, पर उसकी अपनी पत्नी के द्वारा मुँह के बल गिर जाता है। इसे बहुत सुंदर और रोचकता से दिखाया गया है।

KEYWORDS:

हिंदी कहानी, स्त्री संवेदना, नारी पात्र, मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा सोबती.

प्रस्तावना:

"अगर एक वोट और होता तो भैया हारते नहीं। विश्वास नहीं कर सकी। मेरे भीतर सब कुछ डाँवा-डोल होने लगा, लेकिन क्या करती? उस दिन मैं अपनी भीतर की ईसुरिया को मार नहीं पाई।"

कृष्णा सोबती जी अपनी कहानी "सिक्का बदल गया" में शाहनी पात्र के द्वारा स्त्री के साहस और प्रेम की सामर्थ्य को दर्शाया है। शाहनी अपने ससुराल की शान के साथ प्रेम की मूर्ति थी। मातृत्व की देवी बनी,

अंत तक उसकी मातृत्व की डोर को नहीं छोड़ पाई। समय के साथ सब बह गया, पर नए संदर्भों को स्वीकार करने की अजब शक्ति दिखाती है। क्षमाशील-त्याग में खुद की संपत्ति अपने बच्चों के लिए छोड़ती है। जो बच्चे उसे उसके घर और गाँव से बाहर निकालते हैं, उन्हें आशीष देती है कि खुश रहो और उनकी मनोकामना पूर्ण हो। पूरे समाज के सामने से अपनी आँसुओं को छुपाती है। उनकी आँखों में आँसू देती है। समय बलवान है, समय से भी बलवान स्त्री की सहनशक्ति है, यही यहाँ दिखाया है।

"सोना, चाँदी, बच्चा वह सब तुम लोगों के लिए है। मेरा सोना तो एक-एक जमीन में बिछा है।"

मालती जोशी जी ने अपनी कहानी "बहुरि अकेला" के माध्यम से बदलते संबंधों का चित्रण करती है। माता-पिता के मरने के बाद बड़े भाइयों की जिम्मेदारी बनती है अपनी छोटी बहन की शादी करवा दें। साथ में पुरुषों की शौकीन इच्छाओं के तले दबी स्त्री के भाव और स्वतंत्र निर्णय की जाग्रति को दिखाया है। अपने व्यक्तिगत जीवन के उतार-चढ़ाव किसी दूसरों को दिखाने की जरूरत नहीं, अपनी आत्म-सम्मान और अपनी आर्थिक स्वतंत्रता को खोना नहीं चाहती। इसके लिए अपनी सभ्यता से बाहर जाकर भी अपने रिश्ते को निभाने का साहस दिखती है।

इस कहानी की पात्र अंजू शर्मा। एक उम्र में शादी न होने के कारण खुद के लिए नहीं, अपने भाई-भतीजियों के लिए शादी करती है। पत्नी धर्म निभाती है, पर पति धर्म निभाने की बारी का इंतजार करती है। पर वो दिन नहीं आता, तो निराश मनोवृत्ति से रिश्ता तोड़ लेती है, पर समाज के नजरों से नहीं। स्त्री कितना भी पढ़ ले, आर्थिक स्वावलंबन बने, फिर भी अपने संबंधों के लिए अपने भावनाओं का कत्ल होते देखती है। फिर भी उन संबंधों को जीती है। यही अंजू शर्मा की पात्र की अद्‌भुत शक्ति सामने आती है।

"आनंद यात्रा? वाह! तुम क्या सोचती हो तुम कोई हुस्न परी हो जिसके लिए मैं दीवाना हो चला आता हूँ।" अत्यंत कसैले स्वर में कहा, "मैं हुस्न परी होती तो चौंतीस साल तक अनब्याही न बैठी रहती, और न ही दो बच्चों के बाप से शादी करती।"

मृदुला गर्ग जी की "हरी बिंदी" कहानी में स्त्री स्वतंत्रता का ज़िक्र

करती है। कोई बंधन नहीं, कोई पूछने वाला नहीं, बस मन किया, कर लिया। बंधन से मुक्त स्वच्छंद जीवन, एक दिन की आज़ादी और कुछ नहीं। बेरंग बेलगाम मुक्त आनंद इन पलों को समेटे है। घिसी-पिटी परंपरा, कर्तव्य निभाते अपनी इच्छाओं को मारना। पराए मर्द के साथ होते हुए भी कोई गिला-शिकवा नहीं, ना ही डर। यही हरी बिंदी की विशेषता है।

उनकी दूसरी कहानी "मीरा नाची" स्त्री मनोदशा का वर्णन करती है। पति दूसरी स्त्री के साथ घर बसाया है। पहली पत्नी को समाज के नियमानुसार घर में रखा है, पर उसकी जिम्मेदारी लेने से इनकार करता है। तब पत्नी के मन में बदलते विचारों को दिखाया है। स्वयं स्त्री है, बेटी भी स्त्री है। बेटी की हर इच्छा को तोड़ती है। भविष्य में यही बेटी किसी का घर उजाड़ देगी, मानती है। स्त्री ही स्त्री का सुख चुराती है, यह मानकर पति से गुस्सा नहीं करती, बल्कि अपनी बेटी की हरकतों पर ध्यान देती है। बेटी भी अपनी माँ की आँखों से चुपके से अपने आनंद का समय खोजती है। जो भी अवकाश मिलता है, उसमें छोटे-छोटे पलों में जीने की अदम्य इच्छा शक्ति इसमें दिखाई है।

सुधा अरोड़ा जी की "रहोगी तुम वही" कहानी के माध्यम से पति-पत्नी के बीच का बांधव शुरू में स्नेह, प्रेम से आगे बढ़ा है। पर जब स्त्री माँ बनती है, तो उसमें बदलते उसकी स्थिति को दर्शाया है। युवती माँ बनती है, तो अपने तरफ ध्यान न देकर अपने बच्चों के तरफ ध्यान देकर खुद को एक गँवार गंदगी के दलदल में डाल लेती है। संयुक्त परिवार में बच्चों को लेने के लिए कोई न कोई रहता है और एकल परिवार में कोई नहीं होता। बच्चों की परवरिश करना आसान नहीं। जब बच्चे छोटे थे तो पत्नी गँवार, बेकार। बच्चों के साथ बच्ची बनती है तो ग़लत। बच्चे बड़े हो गए, माँ अपने जीवन के अधूरे राह को पूरा करने अपने आप को बदल लेती है, तो भी पुरुष को पसंद नहीं। शादी के बाद पुरुष पिता बनता है, यह याद है, लेकिन स्त्री माँ बनी है, यह भूल जाता है।

"कितनी भी किताबें पढ़ लो, तुम्हारी बुद्धि में कोई बढ़ोत्तरी होने वाली नहीं है। रहोगी तो तुम वही!"

संदर्भ ग्रंथ

» कथा सप्तक: -सं: - डॉक्टर मंजुला चौहान. देशमुख अफशा बेगम
» समकालीन साहित्य: -सं: - डॉक्टर राजेंद्र पोवार
1. कथा सप्तक: -पृष्ट. 17
2. वही -पृष्ट. 23
3. वही -पृष्ट. 36
4. वही: -पृष्ट. 30

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.